Title: Reference made to the 50th Anniversary of the first sitting of the two Houses.

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली) : अध्यक्ष महोदय, आज 13 मई है और संसद की 50वीं वर्गांठ है। संसद की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर सरकार को जानदार और शानदार ढंग से 50वीं वर्गांठ मनानी चाहिए। हम संसद के सदस्य हैं और आप वर्तमान अध्यक्ष हैं लेकिन सरकार ने हल्के ढंग से इसे लेकर केवल डाक टिकट जारी करने की बात कही है। â€¦ (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदयः मैं इसी विाय पर निवेदन करना चाहता हूं।

11.01 hrs.

अध्यक्ष महोदयः माननीय सदस्यगण, आज का दिन हमारे देश के लिए विशेा रूप से हम सांसदों के लिए, विशेा महत्व का दिन है। पचास वर्ा पहले आज ही के दिन स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहले आम चुनावों के माध्यम से निर्वाचित जनप्रतिनिधि, हमारे सर्वाधिक श्रेठ अध्यक्षों में से एक दादा साहिब जी.वी. मावलंकर की अध्यक्षता में, इसी ऐतिहासिक कक्ष में मिले थे। आज का दिन स्वतंत्र भारत के लिए, संस्थाओं के निर्माण के उस प्रथम चरण का समापन था, जिस की प्रक्रिया 9 दिसम्बर, 1946 को संविधान सभा की पहली बैठक के साथ प्रारम्भ हुई थी।

आज हम सब के लिए ऐसा अवसर है, जब हमारे संसदीय लोकतंत्र की पहली अर्धशती के संबंध में हमें आत्म निरीक्षण और मूल्यांकन करना चाहिए। पिछले पचास वर्ाों में हमारे देश ने स्वयं को एक सुदृढ़ लोकतंत्र के रूप में स्थापित किया है और विभिन्न क्षेत्रों में तीव्र प्रगति की है। अपनी सामाजिक-आर्थिक प्रगति और राजनीतिक स्थिरता पर हमारा गर्व करना उचित ही है जो पिछले पांच दशकों के दौरान हमने अपनी उत्तरोतर संसदों के माध्यम से प्राप्त की है। इन घटनापूर्ण दशकों के दौरान इस ऐतिहासिक सदन ने निःस्वार्थ नेताओं का हमारी विशाल और विविधतापूर्ण जनता की शिकायतों को मुखरित और व्यक्त करते हुए देखा है। यह सदन एक ऐसा स्थल है जहां हमारी विविधताएं एक दूसरे में समाहित हुई हैं और उनमें से हमारे देश की एकजुट पहचान उभर कर सामने आई है।

यह एक ऐसा अवसर भी है जब हमें राट्रपिता महात्मा गांधी और डा. बाबा साहिब अम्बेडकर हमारे गणतंत्र के उन संस्थापकों को आदरपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करनी चाहिए जिन के लिए राट्र की सेवा में कोई भी त्याग बहुत बड़ा नहीं था और जिन की वजह से इन सारे वर्ाों के दौरान हम एक स्वतंत्र और गरिमापूर्ण जीवन जी सके। यह स्वार्थ रहित नेताओं के समर्पण और प्रतिबद्धता, राट्र के लिए असंख्य अज्ञात सैनिकों के बलिदानों और देश की सम्पूर्ण जनता के हार्दिक समर्थन के प्रति धन्यवाद व्यक्त करने का अवसर भी है जिस के कारण आज हम विश्व में सबसे बड़े कार्यशील लोकतंत्र के रूप में अपने ऊपर गर्व कर सकते हैं।

माननीय सदस्यों, हमारी लोकतांत्रिक संस्थाएं समय की कसौटी पर खरी उतरी हैं। आज हमारी संसद को गर्व है कि स्वतंत्रता के बाद हमने जिस राजनीतिक व्यवस्था का चयन किया था, उसमें वह हमारी जनता की प्रधानता का स्मरण दिलाती है। इसके साथ यह जरूरी है कि हम अपने लोकतंत्र और लोकतांत्रिक संस्थाओं को और अधिक सुरक्षित बनाने के साथ-साथ उन्हें और अधिक मजबूत बनाएं। इस सब के लिए जरूरी है कि हम इस बात को याद रखें कि लोकतंत्र ऐसी व्यवस्था है जो संवाद और विचार-विमर्श पर आधारित होता है। लोकतंत्र तभी फल-फूल सकता है जबकि प्रत्येक संबंधित व्यक्ति पर्याप्त सहिणुता के साथ-साथ संसदीय अनुशासन और शालीनता के मानदंडों के प्रति अपने आप को पूरी तरह से समर्पित करे।

प्रातिनिधिक लोकतंत्र में संसद से यह अपेक्षा की जाती है कि वह इन संस्थाओं तथा सम्पूर्ण देश के लिये एक आदर्श संस्था के रूप में कार्य करे।

जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों के रूप में हम सबके लिये आवश्यक है कि हम इस बात को स्वीकार करें कि हमारी विविधता ही हमारी शक्ति है। हमारे राजनीतिक परिदृश्य में किसी भी फूट डालने वाले कार्य के लिये कोई गुंजाइश नहीं होनी चाहिये। लोकतंत्र सह-अस्तित्व की कला है। हमें यह समझना चाहिये कि हिंसा और नफरत से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। बीते समय में हमने कसौटी पर परखे जिस मार्ग को चुना था वह अहिंसा का मार्ग था जिसने हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के लिये प्रेरणा दी थी और हमारा योगदान किया था। आज भी हमारे देश के लिए ही नहीं, अपितु सारे विश्व के लिये ही उस पथ की प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई है।

इस महान देश की संसद के सदस्यों के रूप में हम सभी का एक समान लक्ष्य है और वह लक्ष्य है देश के विभिन्न विश्वासों और विचारधाराओं वाली सम्पूर्ण जनता के अधिकतम कल्याण का लक्ष्य।

हमारे देश के करोड़ों लोगों के सामाजिक, आर्थिक उत्थान का कार्य अभी अधूरा है। आइये, हम सब इस महान और उपयोगी लक्ष्य की प्राप्ति के लिये एकजुट हों और पिछले पांच दशकों की अपनी उपलब्धियों को सुदृढ़ करने के लिये और आगे प्रयास करें।

माननीय सदस्यो, इस बात को समझने के साथ ही आइये हम सब एक बार फिर अपने आपको देश की सेवा में समर्पित करें ताकि अगले 50 वर्ाों में भारत और अधिक मजबूत, समृद्ध और भावनात्मक रूप से एक हो जाये।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली) : अध्यक्ष महोदय, सरकार से कहा जाये कि हल्के ढंग से जो जानकारी दी, शानदार ढंग से समारोह मनाया जाना चाहिए था।

संसदीय कार्य मंत्री तथा संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री (श्री प्रमोद महाजन) : अध्यक्ष जी, मैं इस बारे में कुछ कहना चाहता हूं। बार-बार यह विाय यहां उठाया जा रहा है, इसका मुझे खेद है। संसद का स्वर्ण जयन्ती समारोह संसद को आयोजित करना चाहिये था। दुर्भाग्य से पहले अध्यक्ष नहीं थे, अब आप आये हैं। आप इस वर्ा संसद की स्वर्ण जयन्ती मनाने के लिये जो कार्यक्रम करना चाहें, सरकार पूरी ताकत के साथ आपके पीछे खड़ी रहेगी लेकिन सरकार संसद की स्वर्ण जयन्ती मनाये, यह मुझे बिलकुल ठीक नहीं लगता। संसद बड़ी है, सरकार बहुत छोटी है। सरकार आपकी सहायता करेगी। स्वर्ण जयन्ती आपको मनानी चाहिये, इसमें सरकार को दोा देना ठीक नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : मैं माननीय प्रमोद जी से सहमत हूं। हमारी तरफ से, संसद की तरफ से, लोक सभा की तरफ से अगले साल स्वर्ण जयन्ती मनाई जायेगी - यह मैं आश्वस्त करता हूं।

MR. SPEAKER: We now go to the 'Zero Hour'.

...(*Interruptions*)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI (RAIGANJ): Sir, an hon. Member from the principal Opposition party has given a notice on a very important issue. ...(*Interruptions*) Shri Pawan Kumar Bansal has given a notice on a very important matter. Let him be heard. ...(*Interruptions*)

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL (CHANDIGARH): Sir, I may kindly be allowed to speak. I have given a notice regarding a very important matter. ...(*Interruptions*)

SHRI BASU DEB ACHARIA (BANKURA): Sir, I have also given a notice on a very important issue. ...(*Interruptions*)

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL : Sir, it is a very important matter, which is of concern to the entire country. ...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: All the notices are on very important issues. I will take them up one by one. If all of you co-operate, everyone would get an opportunity.

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : Sir, it is a very important issue. ...(*Interruptions*)

SHRI S. JAIPAL REDDY (MIRYALGUDA): Sir, you should permit Shri Pawan Kumar Bansal to speak. ...(*Interruptions*)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली) : अध्यक्ष जी, श्रमजीवी ट्रेन दिल्ली से पटना जा रही थी, उसके बारे में हमें बोलना है।â€¦ (व्यवधान)